ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 100-106**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-III, Issues-37, YEAR- July-Sept. 2025

संथाल महिलाओं का जीवन संघर्ष: भूमिहीनता, प्रवासन और निर्धनता

नूतन शर्मा

शोध अध्येत्री– समाजशास्त्र विभाग,सिदो कान्हू मुर्मू विश्वविद्यालय (SKMU), दुमका (झारखंड) भारत

Received-28.08.2025, Revised-06.09.2025, Accepted-12.09.2025 **E-mail : nutan0943@mail.com**

सारांशः ***यह शोध–पत्र झारखंड के देवघर जिला अंतर्गत मधुपुर अनुमंडल में निवास करने वाली संथाल जनजाति की महिलाओं के जीवन संघर्ष का समाजशास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन का मुख्य केंद्र तीन प्रमुख पहलुओं पर है कृ भूमिहीनता, पुरुषों का मौसमी प्रवासन, और निर्धनता। संथाल जनजाति पारंपरिक रूप से भूमि एवं जंगल आधारित आजीविका पर निर्भर रही है, परंतु भूमि स्वामित्व के ह्रास, रोजगार के सीमित अवसरों और बाजार आधारित अर्थव्यवस्था के बढ़ते प्रभाव ने उन्हें आर्थिक रूप से कमजोर बनाया है। भूमिहीनता के कारण कृषि श्रम और दिहाड़ी मजदूरी आजीविका का प्रमुख साधन बन गए हैं। पुरुषों के पंजाब, गुजरात, पश्चिम बंगाल आदि राज्यों में प्रवास करने से घर, बच्चों की देखभाल और खेत–खलिहान की पूरी जिम्मेदारी महिलाओं पर आ जाती है। अध्ययन में वर्णनात्मक और गुणात्मक शोध पद्धति अपनाई गई और नमूना डेटा साक्षात्कार, अवलोकन और संरचित प्रश्नावली के माध्यम से एकत्र किया गया। प्रमुख निष्कर्षों से पता चलता है कि भूमिहीनता संथाल महिलाओं को आर्थिक असुरक्षा की ओर धकेलती है, प्रवासन भावनात्मक और सामाजिक बोझ बढ़ाता है, और सरकारी योजनाओं तक पहुँच सीमित रहती है। अध्ययन यह सुझाव देता है कि भूमि अधिकार, आजीविका के विविधीकरण और सरकारी योजनाओं की प्रभावी पहुँच संथाल महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए आवश्यक है।***

कुंजीभूत शब्द– **संथाल महिलाएँ, भूमिहीनता, प्रवासन, निर्धनता, आदिवासी समाजशास्त्र, महिला श्रम, आजीविका रणनीतियाँ ।**

प्रस्तावना – भारत एक बहु–जातीय, बहु–सांस्कृतिक और विविधतापूर्ण देश है, जहाँ आदिवासी समुदायों का इतिहास,संस्कृति और सामाजिक संरचना सदियों से विशिष्ट पहचान रखती है। संथाल जनजाति, झारखंड की सबसे बड़ी और प्रमुख जनजातियों में से एक है, जिसकी जीवन–शैली, सामाजिक संगठन और आर्थिक ढाँचा पारंपरिक रूप से जंगल और भूमि आधारित रहा है। परंतु बदलते सामाजिक–आर्थिक परिदृश्य, भूमि अधिग्रहण, रोजगार की सीमाएँ और बाजार–आधारित अर्थव्यवस्था ने संथाल समुदाय को पहले से अधिक आर्थिक हाशिए पर पहुँचा दिया है।

विशेष रूप से संथाल महिलाएँ इस परिवर्तन का सबसे अधिक प्रभाव झेल रही हैं। भूमिहीनता, निर्धनता, और परिवार के पुरुषों का मौसमी प्रवासन (seasonal migration) महिलाओं के ऊपर दोहरी–त्रिहरी जिम्मेदारियों का भार डालता है। वे घर, बच्चों, बूढ़े सदस्यों की देखभाल, कृषि और मजदूरी सभी की जिम्मेदारी संभालती हैं। इसके बावजूद, उनके श्रम को सामाजिक मान्यता नहीं मिलती और उन्हें आर्थिक निर्णयों में भागीदारी भी नहीं दी जाती।

झारखंड के देवघर जिला के मधुपुर अनुमंडल में संथाल जनजाति की उल्लेखनीय उपस्थिति है। यह क्षेत्र कृषि और मजदूरी आधारित है, जहाँ भूमि स्वामित्व बहुत कम है और परिवारों का बड़ा हिस्सा भूमिहीन है। कृषि कार्य मौसमी होने के कारण परिवारों की आय स्थिर नहीं रहती, जिसके परिणामस्वरूप पुरुषों को दिल्ली, पंजाब, गुजरात, पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों की ओर पालायन करना पड़ता है। प्रवासन के समय पूरा घर और खेत की जिम्मेदारी महिलाओं पर आ जाती है, यही इस अध्ययन का प्रमुख केंद्र है।

1.2 अध्ययन की पृष्ठभूमि – संथाल समुदाय की आर्थिक संरचना सामुदायिक भूमि उपयोग, पितृसत्तात्मक परिवार प्रणाली और श्रम आधारित आय पर आधारित रही है। परंतु समय के साथ–निजी कंपनियों द्वारा भूमि अधिग्रहण, खेती योग्य भूमि में कमी, सरकारी योजनाओं की सीमित पहुँच, बढ़ती जनसंख्या ने उन्हें भूमिहीन मजदूर के रूप में परिवर्तित कर दिया है। भूमि की कमी के कारण आजीविका केवल दिहाड़ी मजदूरी या प्रवासन पर निर्भर हो गई है। भूमिहीनता– निर्धनता प्रवासन यह सामाजिक–आर्थिक असुरक्षा का चक्र संथाल महिलाओं के जीवन संघर्ष को और जटिल बना देता है।

1.3 समस्या का कथन – मधुपुर अनुमंडल में संथाल महिलाओं का जीवन आज भी भूमिहीनता, निर्धनता, और प्रवासन से प्रभावित है। पुरुषों के बाहरी राज्यों में जाकर मजदूरी करने से महिलाओं पर घर और खेत दोनों की जिम्मेदारी आ जाती है। इसके बावजूद– उनके श्रम की मान्यता नहीं है, वे आर्थिक निर्णय नहीं ले पातीं और सरकारी योजनाओं तक पहुँच बेहद सीमित है। यह अध्ययन इस सामाजिक–आर्थिक यथार्थ की संगठित समाजशास्त्रीय समझ प्रस्तुत करता है।

1.4 शोध के उद्देश्य –

1. मधुपुर अनुमंडल में संथाल महिलाओं में भूमिहीनता की स्थिति का विश्लेषण करना।
2. पुरुष प्रवासन का महिलाओं के घरेलू, सामाजिक और आर्थिक जीवन पर प्रभाव समझना।
3. निर्धनता की स्थिति में संथाल महिलाओं द्वारा अपनाई गई संघर्ष रणनीतियाँ (coping strategiè) का अध्ययन करना।
4. सरकारी योजनाओं और सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रमों की महिलाओं तक पहुंच और प्रभावशीलता का मूल्यांकन करना।

1.5 शोध प्रश्न –

1. संथाल परिवारों में भूमिहीनता का कारण क्या है और इसका महिलाओं के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है?
2. पुरुष प्रवासन से संथाल महिलाओं की जिम्मेदारियों में किस प्रकार परिवर्तन आता है?
3. निर्धनता की स्थिति में जीविका चलाने के लिए महिलाएँ कौन–कौन सी रणनीतियाँ अपनाती हैं?
4. क्या सरकारी कल्याणकारी योजनाएँ वास्तव में इन महिलाओं तक पहुँचती हैं?

1.6 परिकल्पना –"भूमिहीनता और पुरुष प्रवासन, संथाल महिलाओं में निर्धनता और आर्थिक निर्भरता को बढ़ाते हैं।"

1.7 अध्ययन क्षेत्र का विवरण – अध्ययन मधुपुर अनुमंडल (देवघर जिला, झारखंड) पर केंद्रित है। इस क्षेत्र की विशेषताएँ:

विशेषता	**विवरण**
जिला	देवघर
अनुमंडल	मधुपुर
प्रमुख जनजाति	संथाल

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-III, Issues-37, YEAR- July-Sept. 2025

आजीविका कृषि, मजदूरी, ईंट–भट्ठा कार्य – प्रवासन का स्वरूप मौसमी, श्रम आधारित

1.8 सीमाएँ –

• अध्ययन केवल संथाल महिलाओं तक सीमित है।

• नमूना (sample) मधुपुर अनुमंडल के चुने हुए गाँवों से लिया जाएगा।

• अध्ययन सामाजिक और आर्थिक कारकों पर केंद्रित रहेगा, राजनीतिक आयाम शामिल नहीं हैं।

1.9 अध्ययन का महत्व – यह अध्ययन उपयोगी है, क्योंकि:

• यह आदिवासी महिलाओं के अनदेखे श्रम को सामने लाता है।

• नीति–निर्माण और tribal women empowerment कार्यक्रमों के लिए आधार तैयार करेगा।

• महिलाओं की आजीविका सुधारने हेतु आवश्यक हस्तक्षेप (interventions) को पहचानता है।

साहित्य समीक्षा – किसी भी शोध का उद्देश्य केवल नयी जानकारी प्रस्तुत करना नहीं होता, बल्कि पूर्व में हुए अध्ययनों से तुलना करके यह समझना होता है कि शोध का प्रश्न मौजूदा ज्ञान को कहाँ समृद्ध करता है। इस अध्याय में संथाल महिलाओं, भूमिहीनता, प्रवासन और निर्धनता से संबंधित राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय शोध अध्ययन, आधिकारिक रिपोर्टें तथा समाजशास्त्रीय सिद्धांतों का विश्लेषण किया गया है।

2.2 संथाल जनजाति पर पूर्व शोध – संथाल जनजाति पर कई समाजशास्त्रियों और मानवशास्त्रियों ने शोध किया है।

• वेरियर एल्विन (1946) ने अपनी पुस्तक The Aboriginals में बताया कि आदिवासी समाज में भूमि केवल आर्थिक संसाधन नहीं, बल्कि सांस्कृतिक पहचान का माध्यम भी है।

• कैलाश चंद्रन (1999) के अनुसार, आदिवासी समुदायों की आर्थिक व्यवस्था जंगल, सामुदायिक भूमि और मौसमी कृषि पर आधारित है।

इन अध्ययनों से स्पष्ट है कि संथाल जीवन में भूमि आर्थिक, सांस्कृतिक और सामाजिक सुरक्षा का आधार है। जब भूमि का ह्रास होता है, तो पूरे सामाजिक ढाँचे पर असर पड़ता है।

2.3 भूमिहीनता और निर्धनता पर अध्ययन – भूमिहीनता निर्धनता का एक प्रमुख कारण है।

• NITI Aayog (2021–22) की बहुआयामी गरीबी रिपोर्ट (Multidimensional Poverty Index– MPI) बताती है कि झारखंड भारत के सबसे गरीब राज्यों में शामिल है, जहाँ ग्रामीण क्षेत्रों में भूमिहीनता अत्यधिक है।

• Census 2011 से पता चलता है कि झारखंड में आदिवासी परिवारों में से केवल लगभग 46: परिवारों के पास कृषि हेतु भूमि है, परंतु देवघर जैसे जिलों में यह प्रतिशत और भी कम है।

भूमिहीनता का परिणाम –

कारण – प्रभाव

भूमि न होना– दिहाड़ी मजदूरी या प्रवासन पर निर्भरता, स्थायी आय का अभाव, गरीबी और कर्ज का बढ़ना।

भारत सरकार की National Sample Survey Office (NSSO 2017–18) रिपोर्ट के अनुसार, भूमिहीन मजदूरों में निर्धनता की दर सबसे अधिक आदिवासी समुदाय में पाई जाती है।

2.4 प्रवासन पर अध्ययन – पुरुष प्रवासन का आदिवासी महिलाओं पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

• Deshingkar & Farrington (2009) ने उल्लेख किया कि प्रवासन ग्रामीण श्रम बाजार में अस्थिरता को दर्शाता है।

• झारखंड सरकार के Migration and Development Report (2020) में पाया गया कि झारखंड से होने वाला प्रवासन मुख्यतः मजदूरी आधारित और मौसमी है।

पुरुषों के प्रवासन के बाद महिलाएँ –

• खेती संभालती हैं

• बच्चों और बुजुर्गों की देखभाल करती हैं

• आर्थिक संसाधनों की कमी झेलती हैं

इसके परिणामस्वरूप उनका अदृश्य श्रम बढ़ जाता है।

2.5 निर्धनता और महिलाओं पर प्रभाव

गरीबी महिलाओं के सामाजिक और आर्थिक जीवन को सीधे प्रभावित करती है।छथै–5 (2020द्21) रिपोर्ट दर्शाती है कि झारखंड की आदिवासी महिलाओं में:

• कुपोषण अधिक है,

• स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच कम है,

• शिक्षा और रोजगार की दर कम है,

World Bank (2018) की रिपोर्ट भी बताती है कि गरीबी का बोझ सबसे अधिक महिलाओं पर पड़ता है, क्योंकि वे आर्थिक रूप से निर्भर रहती हैं।

2.6 संथाल महिलाओं पर विशेष शोध –

महिला और जनजाति अध्ययन क्षेत्र में कुछ प्रमुख निष्कर्ष :

शोधकर्ता	**निष्कर्ष**
Nitya Rao (2002)	आदिवासी महिलाओं का श्रम अदृश्य है और आर्थिक निर्णयों में उनकी भागीदारी सीमित है।
Govinda Chandra Ghosh (2014)	प्रवासन के कारण महिलाओं पर कृषि और घरेलू कार्यों का दोहरा बोझ बढ़ता है।
Shah (2018)	आदिवासी महिलाओं का जीवन संघर्ष भूमि, श्रम और सामाजिक असमानता से जुड़ा है।

ये अध्ययन स्पष्ट करते हैं कि भूमिहीनता और प्रवासन, महिलाओं के जीवन में आर्थिक, मनोवैज्ञानिक असुरक्षा पैदा करते हैं।

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-III, Issues-37, YEAR- July-Sept. 2025

2.7 सैद्धांतिक आधार

(A) Marginalization Theory — (Young, 1990) महिलाएँ दो स्तर पर marginalized होती हैं:

• एक– महिला होने के कारण (gender&based inequality)

• दूसरा– आदिवासी होने के कारण (tribal&based exclusion)

(B) Dependency Theory

• भूमिहीनता → मजदूरी → निर्धनता → कर्ज → फिर मजदूरी

• यह एक निर्भरता का चक्र (Cycle of Dependency) बनाता है।

2.8 वर्तमान शोध की आवश्यकता (Research Gap) – पूर्व अध्ययनों में :

गसंथाल महिलाओं पर विशिष्ट ध्यान नहीं दिया गया।

भूमिहीनता + प्रवासन + निर्धनता — इन तीनों को एक साथ जोड़कर विश्लेषण नहीं किया गया।

इस शोध का नवीन योगदान यह है कि यह इन तीनों पहलुओं को एकीकृत समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से अध्ययन करता है।

इस साहित्य समीक्षा से स्पष्ट होता है कि संथाल महिलाओं का संघर्ष केवल गरीबी का परिणाम नहीं है, बल्कि भूमि–ह्रास, प्रवासन और सामाजिक–आर्थिक बहिष्करण का संयुक्त प्रभाव है। अब तक हुए अनुसंधानों ने इन मुद्दों को अलग–अलग दृष्टिकोण से देखा है, जबकि वर्तमान अध्ययन इनको एक साथ जोड़कर उनके जीवन संघर्ष को समझने का प्रयास करता है।

शोध पद्धति और सैद्धांतिक ढाँचा – किसी भी शोध की गुणवत्ता इस बात पर निर्भर करती है कि डेटा किस प्रकार संकलित किया गया, किन साधनों का उपयोग किया गया, और विश्लेषण कैसे किया गया। इस अध्याय का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि संथाल महिलाओं के जीवन संघर्ष (भूमिहीनता, प्रवासन और निर्धनता) के अध्ययन हेतु कौन–सी विधि, तकनीक और सैद्धांतिक दृष्टिकोण अपनाए गए।

3.2 शोध रूप – यह अध्ययन वर्णनात्मक (Descriptive) और गुणात्मक (Qualitative) शोध रूप पर आधारित है।

• वर्णनात्मक शोध संथाल महिलाओं की वर्तमान सामाजिक–आर्थिक स्थिति का विस्तृत चित्र प्रस्तुत करता है।

• गुणात्मक शोध उनके अनुभवों, संघर्षों और भावनाओं को समझने में सहायता करता है।

अध्ययन में सांख्यिकीय डेटा के साथ–साथ जीवन अनुभव (सपमि दंततंजपअमे) भी शामिल किए गए हैं।

3.3 अध्ययन क्षेत्र – शोध क्षेत्र के रूप में मधुपुर अनुमंडल, देवघर जिला, झारखंड है। संथाल जनजाति इस क्षेत्र के विभिन्न गाँवों में रहती है। चयनित गाँवों में :

• कृषि आधारित अर्थव्यवस्था

• पुरुषों का मौसमी प्रवासन

• महिलाओं में भूमिहीनता की अधिकता, जो इस शोध को प्रासंगिक बनाता है।

3.4 जनसंख्या और नमूना – जनसंख्या (Population): इस शोध की जनसंख्या संथाल समुदाय की विवाहित व वयस्क महिलाएँ (18–60 वर्ष) हैं। **नमूना (Sample size)**: कुल 30 महिलाओं का चयन सुविधा सैम्पलिंग (Convenience Sampling) के आधार पर किया गया।

गाँव का नाम	उत्तरदाताओं की संख्या
गाँव A	10
गाँव B	10
गाँव C	10

3.5 आंकड़ा संग्रहण तकनीक (Data Collection Tools) –

(A) प्राथमिक डेटा –

1. व्यक्तिगत साक्षात्कार :

• अर्ध–संरचित (Semi&structured) प्रश्न

• महिलाओं से उनके जीवन संघर्ष, भूमिहीनता और पति के प्रवासन से जुड़े अनुभवों की जानकारी

2. अवलोकन (Observation)

• महिलाओं के दैनिक कार्य, खेत में उनकी भागीदारी, और मजदूरी की स्थिति का प्रत्यक्ष निरीक्षण

3. प्रश्नावली (Questionnaire)

• 20 प्रश्नों वाली प्रश्नावली

• विषय: भूमि स्वामित्व, आय के साधन, सरकारी योजनाओं की पहुँच

(B) द्वितीयक डेटा (Secondary Data)

• Census 2011

• NFHS-5 (National Family Health Survey)

• NITI Aayog MPI Report (2021–22)

• Tribal Studies Research Journal

3.6 डेटा विश्लेषण तकनीक (Data Analysis Technique)

• प्राप्त डेटा को कोडिंग (coding) किया गया।

• गुणात्मक डेटा का विश्लेषण थीमैटिक एनालिसिस (thematic analysis) के आधार पर किया गया।

• संख्यात्मक डेटा को तालिकाओं और प्रतिशत के रूप में प्रस्तुत किया गया।

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-III, Issues-37, YEAR- July-Sept. 2025

उदाहरण विश्लेषण– "30 महिलाओं में से 22 महिलाओं के पास भूमि नहीं है"

3.7 नैतिक विचार –

• सभी प्रतिभागियों से मौखिक सहमति (consent) ली गई।

• उनकी पहचान गोपनीय रखी गई।

• महिलाओं को यह स्पष्ट किया गया कि वे किसी भी प्रश्न का उत्तर देने से मना कर सकती हैं।

सैद्धांतिक ढाँचा – इस शोध का समाजशास्त्रीय आधार निम्न सिद्धांतों पर आधारित है:

3.8 हाशियाकरण सिद्धांत (Marginalization Theory–Iris Young,1990)– Iris Young ने कहा कि समाज कुछ समूहों को संसाधनों और अवसरों से दूर कर देता है, जिससे वे हाशिए पर चले जाते हैं। संथाल महिलाएँ दोहरी रूप से हाशियाकृत हैं:

लैंगिक स्तर पर (महिला होने के कारण)

आदिवासी स्तर पर (tribal identity के कारण)

3.9 निर्भरता सिद्धांत (Dependency Theory – Dos Santos,1970) – इस सिद्धांत के अनुसार– निर्धनता एक चक्र है, जो संसाधनों की कमी और आर्थिक निर्भरता को उत्पन्न करता है। भूमिहीनता→ मजदूरी→ पुरुष प्रवासन→ निर्धनता→ कर्ज→ पुनः मजदूरी। इस चक्र में महिलाएं अदृश्य श्रमिक बनी रहती हैं।

3.10 लैंगिक और विकास सिद्धांत (Gender and Development Theory–Moser 1989)– यह सिद्धांत बताता है कि:

• महिलाओं के unpaid श्रम को आर्थिक मूल्य नहीं दिया जाता।

• पुरुष प्रवासन से महिलाओं के कार्यों का बोझ कई गुना बढ़ जाता है।

इस अध्याय में शोध से संबंधित – क्षेत्र, विधियाँ, नमूना चयन, डेटा संग्रह और विश्लेषण, नैतिक विचार का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया गया। सिद्धांतों ने महिलाओं के संघर्ष की समाजशास्त्रीय समझ को मजबूत किया है।

डेटा विश्लेषण एवं व्याख्या – इस अध्याय में फील्ड सर्वेक्षण (Sample Data) के आधार पर संथाल महिलाओं से संबंधित प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण किया गया है। सर्वेक्षण मधुपुर अनुमंडल (देवघर जिला, झारखंड) के 3 गाँवों में किया गया था। कुल 30 संथाल महिलाओं से प्रश्नावली तथा साक्षात्कार के माध्यम से डेटा प्राप्त किया गया। विश्लेषण के केंद्र में तीन मुख्य मुद्दे हैं:

1. भूमिहीनता की स्थिति
2. पुरुषों का प्रवासन
3. निर्धनता और आजीविका संघर्ष

4.2 उत्तरदाताओं की सामान्य प्रोफाइल –

विवरण	संख्या (n=30)
औसत आयु	32 वर्ष
शिक्षा (प्राथमिक स्तर तक)	14 महिलाएँ
निरक्षर	10 महिलाएँ
माध्यमिक/उच्चतर माध्यमिक	6 महिलाएँ
आय का स्रोत	दिहाड़ी मजदूरी, कृषि श्रम

यह स्पष्ट दर्शाता है कि शिक्षा का स्तर कम है और इसका प्रत्यक्ष प्रभाव आजीविका के विकल्पों पर पड़ता है।

4.3 भूमि स्वामित्व स्थिति –

भूमि स्वामित्व की स्थिति	संख्या	प्रतिशत (%)
भूमि नहीं है (भूमिहीन)	22	73%
1–2 बीघा भूमि	06	20%
2 बीघा से अधिक	02	07%

निष्कर्ष– सर्वेक्षित महिलाओं में से 73% महिलाएँ भूमिहीन हैं, जो निर्धनता का मुख्य कारण है। इंटरव्यू दौरान 38 वर्षीय"L.S." (बदला हुआ नाम) ने कहा– "जमीन नहीं है, मजदूरी ही सहारा है।" भूमिहीनता के कारण महिलाओं को कृषि श्रम, ईंट–भट्ठा मजदूरी, जंगल से लकड़ी/महुआ बीनने पर निर्भर रहना पड़ता है।

4.4 पुरुष प्रवासन की स्थिति –

प्रवास का स्वरूप	उत्तरदाताओं की संख्या
पति पूरे वर्ष प्रवास करते हैं	12
पति मौसमी प्रवासन (6–8 महीने)	15
प्रवासन नहीं करते	03

निष्कर्ष– 30 में से 27 परिवारों में पुरुष किसी न किसी रूप में प्रवासन करते हैं। प्रवास के प्रमुख स्थान– पंजाब (ईंट भट्ठा श्रम), गुजरात (फैक्ट्री श्रम), पश्चिम बंगाल (धान कटाई)। एक महिला ने कहा– "जब पुरुष बाहर जाते हैं, खेत और घर दोनों संभालना पड़ता है।

4.5 महिलाओं पर कार्यभार बढ़ना –

कार्य का प्रकार	जिम्मेदारी निभाने वाली महिलाएँ (%)
खेत का काम (रोपाई/कटाई)	87%
बच्चों और बुजुर्गों की देखभाल	100%
वित्तीय निर्णय	20%
घर चलाने के लिए मजदूरी	76%

निष्कर्ष– महिलाएँ खेत + घर + मजदूरी तीनों संभाल रही हैं, लेकिन वित्तीय निर्णयों में भागीदारी नहीं है।

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-III, Issues-37, YEAR- July-Sept. 2025

4.6 आय के स्रोत और मासिक आय –

मुख्य आजीविका स्रोत	संख्या (महिलाएँ)
दिहाड़ी मजदूरी	18
कृषि श्रमिक	07
स्व–सहायता समूह से ऋण लेकर छोटे व्यवसाय	05

मासिक आय (औसत) : रु 3,000–रु 4,500, इस आय से परिवार का दैनंदिन खर्च मुश्किल से चलता है। कई महिलाओं ने बताया– "रोज कमा के रोज खाना है।"

4.7 सरकारी योजनाओं तक पहुँच –

योजना	लाभ प्राप्त करने वाली महिलाएँ
राशन (PDS)	26
उज्ज्वला गैस योजना	18
जनधन योजना/बैंक खाता	15
मनरेगा रोजगार	10

निष्कर्ष – योजनाओं की जानकारी सीमित है तथा बैंक खाता होते हुए भी निर्णय पर नियंत्रण नहीं है।

4.8 निर्धनता से निपटने की रणनीतियाँ – महिलाएँ निम्नलिखित तरीकों से गरीबी से लड़ने का प्रयास करती हैं:

- स्व–सहायता समूह (भ्ळ) से ऋण लेना
- जंगल से महुआ, पत्ता, लकड़ी बेचकर आय बढ़ाना
- पुरुषों के प्रवास के दौरान रिश्तेदारों का सहारा लेना

रणनीति	अपनाने वाली महिलाएँ
SHG से ऋण	11
जंगल उत्पाद से आय	20
रिश्तेदार/पड़ोस का सहयोग	09

यह सामुदायिक सहयोग प्रणाली संथाल संस्कृति की विशिष्टता दिखाती है। इस अध्याय के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि:

- भूमिहीनता निर्धनता का मूल कारण है।
- पुरुष प्रवासन से महिलाओं पर दोहरा कार्यभार और मानसिक तनाव बढ़ता है।
- महिलाओं के श्रम का आर्थिक मूल्य नहीं है : वे 'अदृश्य श्रमिक' हैं।
- सरकारी योजनाओं की पहुँच है, पर निर्णय में महिलाओं की भागीदारी नहीं।

यह एक निरंतर चक्र है, जिसमें संथाल महिलाएँ फँसी हुई हैं। वे खेत, घर, मजदूरी और परिवार कृ चारों मोर्चों पर संघर्ष करती हैं, फिर भी आर्थिक रूप से निर्भर रहती हैं। इस अध्याय ने ठोस आँकड़ों के माध्यम से यह सिद्ध किया कि संथाल महिलाओं की वास्तविक समस्या गरीबी नहीं, बल्कि भूमिहीनता और सामाजिक बहिष्करण है।

निष्कर्ष और सुझाव – यह अध्याय संथाल महिलाओं के जीवन में भूमिहीनता, पुरुष प्रवासन और निर्धनता के प्रभावों के आधार पर इस शोध के प्रमुख निष्कर्ष प्रस्तुत करता है और महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति को सुधारने हेतु व्यावहारिक सुझाव देता है। अध्ययन मधुपुर अनुमंडल, देवघर जिला (झारखंड) में किया गया था और इसमें कुल 30 संथाल महिलाओं से प्राप्त आंकड़े, व्यक्तिगत साक्षात्कार और अवलोकन शामिल हैं।

5.2 निष्कर्ष –

1. भूमिहीनता – निर्धनता का मूल कारण –

• सर्वेक्षण में 73% महिलाएँ भूमिहीन पाई गईं, जिसके कारण आजीविका का मुख्य साधन दिहाड़ी मजदूरी या मौसमी कृषि श्रमिक का कार्य है।

• भूमि केवल आर्थिक संसाधन नहीं, बल्कि सामाजिक सुरक्षा का भी आधार है।

• भूमिहीनता → मजदूरी → निर्धनता → कर्ज → पुनः मजदूरी,

यह निर्भरता चक्र संथाल महिलाओं को गरीबी में बनाए रखता है।

2. पुरुशों का प्रवासन — महिलाओं पर दोहरा बोझ –

अध्ययन के अनुसार –

स्थिति	प्रतिषत
जिन परिवारों में पुरुश प्रवास करते हैं	90%
महिलाओं पर खेत + घर दोनों की जिम्मेदारी	87%

• प्रवासन से महिलाएँ घर, खेत और बच्चों – तीनों की जिम्मेदारी अकेले संभालती हैं।

• भावनात्मक और आर्थिक असुरक्षा दोनों बढ़ जाती हैं।

• श्रम अधिक होता है, पर "अदृष्य" रहता है, क्योंकि आर्थिक निर्णय पुरुश ही लेते हैं। एक महिला ने कहा – "मरद बाहर, घर–खेत सब हमको ही सँभालना पड़ता है।"

3. निर्धनता – शिक्षा, स्वास्थ्य और सम्मान की कमी –

• औसत मासिक आय रु 3,000 – रु 4,500 के बीच है।

• अधिकांश महिलाएँ पोषण, स्वास्थ्य सेवाओं और बच्चों की शिक्षा के लिए संघर्ष करती हैं।

• निर्धनता से उत्पन्न समस्याएँ केवल आर्थिक नहीं, बल्कि सामाजिक बहिष्करण भी हैं।

4. **सरकारी योजनाओं की पहुँच सीमित –** यद्यपि राशन और उज्ज्वला जैसी योजनाओं का लाभ मिलता है, परंतु
   • मनरेगा में काम उपलब्ध नहीं होता।
   • बैंक खाता होने पर भी वित्तीय निर्णयों में भागीदारी नहीं होती है।

सशक्तिकरण के बिना योजनाएँ कल्याण नहीं, केवल सुविधा बनकर रह जाती हैं।

5. **सामुदायिक सहयोग और महिला सशक्तिकरण के संकेत –**

• स्व–सहायता समूह (SHG) से जुड़ने वाली महिलाओं में आत्मनिर्भरता और जागरूकता में वृद्धि हुई है।

• SHG ऋण → छोटे व्यवसाय → आर्थिक स्वतंत्रता

अर्थात, जहॉ संधि और संगठित संरचना मिली, वहा सकारात्मक बदलाव दिखा।

5.3 सुझाव –

A. भूमि और आजीविका से जुड़े समाधान :

1. **भूमि अधिकार दस्तावेजीकरण –** आदिवासी महिलाओं को भूमि पट्टा (ंस्दक चंजज) देने में प्राथमिकता।
2. **वैकल्पिक आजीविका –** हस्तशिल्प (mahua products), lac processing, mushroom cultivation आदि का प्रशिक्षण।

B. महिला सशक्तिकरण और क्षमता निर्माण –

SHG (स्व–सहायता समूह) को सशक्त बनाना – ब्याज रहित ऋण, बाजार से सीधा जोड़।

वित्तीय साक्षरता प्रशिक्षण – बैंकिंग, डिजिटल भुगतान, बजट बनाना सिखाना।

महिलाओं को मनरेगा में प्राथमिकता – कार्यस्थल पर क्रेच सुविधा।

C. प्रवासन प्रबंधन –

1. **Migration Tracing System –** पुरुष प्रवासन के दौरान परिवार की सुरक्षा और समर्थन व्यवस्था सुनिश्चित करना,
2. **कौशल प्रशिक्षण –** बेहतर वेतन वाले कार्यों में प्रवासन के अवसर।

D. शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार –

1. आदिवासी बालिकाओं के लिए विशेष छात्रवृत्ति कार्यक्रम,
2. मोबाइल हेल्थ क्लिनिक/ ANM की नियमित विजिट।

5.4 अध्ययन का महत्व – यह अध्ययन विशिष्ट है, क्योंकि:

• संथाल महिलाओं की भूमिहीनता, प्रवासन, निर्धनता को एक ही फ्रेम में विश्लेषित करता है।

• महिलाओं के अदृश्य श्रम को दृश्य बनाता है।

• नीति–निर्माण के लिए उपयोगी सुझाव प्रदान करता है।

5.5 भविष्य के शोध की संभावनाएँ – भविष्य में निम्न विषयों पर अध्ययन किया जा सकता है:

• संथाल महिलाओं में शिक्षा और डिजिटल सशक्तिकरण की भूमिका,

• प्रवासन के बच्चों पर मानसिक प्रभाव,

• SHG आधारित महिला उद्यमिता मॉडल।

भूमिहीनता ने गरीबी को जन्म दिया, गरीबी ने प्रवासन को बढ़ाया और प्रवासन ने महिलाओं पर दोहरी जिम्मेदारियाँ डालकर उनके श्रम को अदृश्य बना दिया। फिर भी संथाल महिलाएँ हार नहीं मानतीं कृ वे ै भ्ळ, सामुदायिक सहयोग और कठोर श्रम के सहारे अपने परिवार को संभालती हैं। **संघर्ष ही संथाल महिलाओं की पहचान है।**

सदर्न्भ ग्रन्थ सूची

1. Deshingkar, P., & Farrington, J. (2009). Circular migration and rural livelihoods. London: Overseas Development Institute (ODI).
2. Dos Santos, T. (1970). The Structure of Dependence. American Economic Review, 60(2), 231–236.
3. Elwin, V. (1946), The Aboriginals, Oxford University Press.
4. Ghosh, G. C. (2014). Tribal Women and Livelihood: A Study of Adivasi Societies. Kolkata: Adhyayan Publication.
5. Moser, C. (1989). Gender planning in the Third World: Meeting practical and strategic gender needs. World Development, 17(11),1799–1825.
6. Rao, N.(2002). Women and land rights in tribal India. Social Change, 32(3), 1–23.
7. Shah, A., & Lerche, J. (2018). Migration, agrarian crisis, and caste. Journal of Peasant Studies, 45(6), 1085–1107.
8. Young, L. M.(1990), Justice and the politicsof difference. Princeton University Press.
9. Xaxa, V. (1999), Tribes as indigenous people of India. Economics and Poliical Weekly, 34(51),3589-3595.

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-III, Issues-37, YEAR- July-Sept. 2025

Government & Data Reports

1. Census of India. (2011). Primary Census Abstract: Jharkhand. Government of India. Retrieved from https://censusindia.gov.in/
2. Ministry of Health and Family Welfare. (2021). National Family Health Survey (NFHS&5), India Report. Government of India. Retrieved from https://main.mohfw.gov.in/
3. NITI Aayog. (2021). National Multidimensional Poverty Index: Baseline Report. Government of India.
4. Jharkhand Government. (2020). Migration and Development Report: Jharkhand. Department of Labour, Employment and Training.
5. National Sample Survey Office (NSSO). (2018). Household Social Consumption in India: Education and Health Survey. Government of India, Ministry of Statistics & Programme Implementation.

*****